ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 353-357
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-7, No.-I, Issues-VIII YEAR- June-2017

सुमन के काव्य में राष्ट्रीयता के स्वर

डॉ0 प्रतिष्ठा शर्मा
प्राध्यापक– हिन्दी अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म0प्र0), भारत

भारतीय साहित्य का आधुनिक काल अपने प्रारंभिक चरणों में राष्ट्रीयता की प्रखर अभिव्यक्ति के लिए अलग पहचान रखता है। राष्ट्रीयता के भाव के उदय और विकास के पीछे अंग्रेजों की दमनात्मक प्रवृत्ति का प्रतिकार महत्वपूर्ण रहा है। विशेष तौर पर सन् 1857 के विद्रोह के निर्मम दमन के पश्चात् देश में अत्यन्त निराशापूर्ण और भयावह वातावरण का निर्माण हो गया था। जनता अंग्रेजी शासन के नृशंस अत्याचारों से आतंकित थी किंतु यह स्थिति अधिक समय तक नहीं रही। सन् 1876 में भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने के उद्देश्य से आनन्दमोहन बोस–द्वारिकानाथ गांगोजी आदि के प्रत्यन से भारतीय संघ (Indian Association) की स्थापना हुई इसके पश्चात् ही सन् 1885 में दिसम्बर में बम्बई कांग्रेस की स्थापना हुई। यह एक अखिल भारतीय स्तर पर कार्य करने वाली राजनैतिक संस्था थी कन्तु इसका उद्देश्य अंग्रेजी शासन का विरोध नहीं वरन् ब्रिटिश शासनान्तर्गत से स्वराज प्राप्त करना था। परन्तु कुछ समय पश्चात् जैसी ही कांग्रेस ने स्वराज्य की मांग की अंग्रेजी शासन सतर्क हो गया। बंगाल विभाजन के पश्चात् कांग्रेस की अंग्रेजी शासन विरोधी प्रवृत्ति तीव्र हो गई ।

यही वह समय था जब एशिया के एक लघु राष्ट्र जापान ने यूरोप के एक महान राष्ट्र रूस पर विजय प्राप्त की थी। यह एशिया के अन्य देशों की तरह भारत के लिये भी गौरव की बात थी। इस घटना ने भारत के राष्ट्रीय आंदोलन को भी बल प्रदान किया। कांग्रेस में एक ऐसे दल का उदय हुआ जो शासन को प्रसन्न रखने की नीति त्याग कर स्वराज्य–प्राप्ति के लिये देशव्यापी उग्र आंदोलन करना चाहता था, किन्तु अंग्रेजी शासन के दमन ने उन्हें इस योजना में सफल न होने दिया। अनेक राष्ट्र–नेता एक लम्बी अवधि के लिए जेल में बन्द कर दिये गये। प्रतिक्रिया के रूप में एक क्रांतिकारी दल का संगठन हुआ जिसका उद्देश्य सशस्त्र क्रांति द्वारा देश को अंग्रेजों की शासन–सत्ता से मुक्त करना था।

सन् 1914 ई. में प्रथम विश्व युद्ध आरम्भ हुआ अंगेजी शासन के आश्वासन पर भारत में जन धन से अंग्रेजों की सहायता की परन्तु बदले में 'रोलेट एक्ट' जलियांवाला बाग का भीषण नर–संहार मिला। सन् 1921 में असहयोग आन्दोलन महात्मा गाँधी के नेतृत्व में हुआ। सहस्रों भारतीय बंदी बनाये गये भारतीय जनता ने लाठियों और गोलियों के प्रहार सहे, किन्तु स्वराज्य प्राप्ति की शिक्षा में कोई विशेष प्रगति दृष्टिगोचर न हो। देश ब्रिटिश साम्राज्यवाद, भारतीय पूंजीवाद तथा सामन्तवाद से बुरी तरह पीडित था। सन् 1917 में रूसी क्रांति के पश्चात वहाँ जारशाही के स्थान पर वोलशेविक शासन स्थापित हो चुका था और नयी–नयी योजनाएँ कार्यान्वित होती जा रही थीं। इन योजनाओं का वहाँ के कृषकों और श्रमिकों से निकट संबंध था। राष्ट्रीय आन्दोलन की असफलता के कारण भारतीय कृषकों और श्रमिकों का विश्वास कांग्रेस से उठता जा रहा था और वे रूस की मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित होते जा रहे थे अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा भी दी। उनके नये–नये संगठन बनने लगे और वे विविध रूपों में क्रियाशील दिखाई देने लगे। कांग्रेसी नेता भी इस स्थिति से अप्रभावित न रह सके। उन्होंने सन् 1931 में कराची अधिवेशन में कृषकों और श्रमिकों के लिए अनेक सुविधाओं की मांग करते हुये समाजवादी विचारधारा के प्रकाश में अग्रसर होने का संकल्प कर कांग्रेस के इतिहास में एक नया अध्याय आरम्भ किया। सन् 1936 में 'अखिल भारतीय किसान सभा' स्थापित हो गई।

सन् 1918 और 1920 के मध्य देश में श्रमिक हड़तालों की एक बाढ़ सी आ गई थी। सन् 1920 में लगभग दो सौ हड़तालें हुई और उनमें पन्द्रह लाख श्रमिकों ने भाग लिया। सन् 1929 तक पहुँचते–पहुँचते श्रमिक आंदोलन से देश की राष्ट्रीय चेतना भी प्रभावित हुये बिना न रह सकी। जब सब लोग स्वतंत्रता का स्वप्न देख रहे थे तभी श्रमिक वर्ग समाजवादी भारत के स्वप्न देख रहे थे। सन् 1935 तक आते–आते कांग्रेस में समाजवादी विचारधारा पूर्णरूपेण समाहित हो गयी। पं. जवाहरलाल नेहरू ने सन् 1936 के लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन में अपने अध्यक्ष पद से स्पष्ट शब्दों में कहा कि–

'चाहे समाजवादी सरकार की स्थापना सुदूर भविष्य की ही बात क्यों न हो और हम में से बहुत लोग उसे चाहे अपने जीवन में न देख सके, किन्तु वर्तमान स्थिति में ही समाजवाद ही वह प्रकाश है जो हमारे पथ को आलोकित करता

अनुरूपी लेखक

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

है।' भारत की इस राजनीतिक स्थित्ति का हमारे जीवन और साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। इसी स्थिति ने हमारे साहित्य की पूर्वधारा को मोड़कर प्रगतिवाद को जन्म दिया था और प्रगतिवादी साहित्य का सृजन अनिवार्य हो गया। सुमन जी की गाँधीजी के प्रति अदम्य श्रद्धा थी । गाँधीजी के सत्य अहिंसावादी दर्शन एवं राष्ट्रीय सांस्कृतिक विचार दर्शन का सुझाव सुमनजी के काव्य पर पड़ा है। स्वतंत्रता संग्राम के सूत्रधार महात्मा गाँधी सन् 1920 में असहयोग के दृढ़ समर्थक बन गये थे। उनके असहयोग का तात्पर्य था–आत्मबल द्वारा विदेशी सत्ता से असहयोग, सरकारी उपाधियों और सम्मानों का त्याग। सन् 1926 में क्रांतिकारी आंदोलन ने जोर पकड़ा। क्रांतिकारियों को बच्चन ने निकट से देखा। भगतसिंह के बलिदान से देश स्तब्ध रह गया। 1928–29 में पुनः देश में छात्र वर्ग एवं युवक समूह में राष्ट्रीय भावना प्रमुख हुई। देश में युवक आन्दोलन का प्रादुर्भाव होना इस वर्ष 1928 की विशेषता थी। 26 जनवरी, 1930 को पूर्व स्वराज्य दिवस मनाया गया। इसी वर्ष 12 मार्च 1930 को गाँधीजी दण्डी ग्राम की ओर प्रस्थान किया। 6 अप्रैल, 1930 को गाँधीजी ने नमक कानून तोड़ा। 5 मई को गाँधीजी को बंदी बना लिया गया, फलतः देश में हड़तालें हुई।

सन् 1933 में सुमनजी क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आए। वे चन्द्रशेखर आजाद की पार्टी में काम किए हुए पक्के क्रांतिकारी हैं। उन्होंने आजादी के आंदोलन में स्वदेशी वस्त्र अपनाए थे। आगे चलकर सुमनजी ने राष्ट्रीय भावों से परिपूर्ण रचनाएँ लिखकर देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में बड़ा योगदान दिया। सुमनजी के प्रकाशित कविता संग्रहों में उनकी कविता यात्रा का सुन्दर परिचय मिलता है। 'हिल्लोल' में कवि रूमानी प्रवृत्ति के रहे, 'जीवन के गान' में जीवन से जुड़ गये, प्रलय–सृजन' में भावों का प्रलय फैलाया। दोनों संग्रहों में राष्ट्रीयता का स्वर गूँज उठा, देश की स्वतंत्रता के लिये शहीद होने का संदेश उनमें मिलता है। विश्वास बढ़ता ही गया' संग्रह में नाम के अनुरूप देश के स्वतंत्र होने का विश्वास पक्का हुआ है, 'पर आँखे नहीं भरी' कविता संग्रह में कुछ रोमानी प्रवृत्ति दिखायी पड़ी 'पर आँखें नहीं भरी' के खण्ड में महात्मा गाँधी जी की वंदना व पावन चरित्रगायन से राष्ट्रीयता के भाव प्रस्फुटित हो उठीं। 'मिट्टी की बारात' तो उनके अनुसार सूरज का सातवाँ घोड़ा है जो राष्ट्र के पुनर्निमाण व समाजोद्धार पर जोर डालता है। 'वाणी की व्यथा' में भारत की वर्तमान दुर्दशा का चित्रण करके राष्ट्रोद्धार की प्रेरणा कवि ने दी है। 'कटे अँगूठों की बंदनवार' में 15–08–1948 के गीत, वीर जवाहर की माँग आदि साबित करते हैं कि डॉ. सुमन में राष्ट्रीयता की चिंगारी अब भी प्रज्ज्वलित है। 'विश्वास बढ़ता ही गया' के उत्तरार्ध तक की कविताएँ स्वतंत्रता पूर्व लिखी गई हैं जिनमें देश की आजादी के लिये लड़ने का आह्वान है तो स्वतंत्रता के परवर्ती युग में रचित कविताएँ देश और समाज के उद्धार पर बयान देती है। हर कविता संग्रह में राष्ट्र के उन्नायक कवि व नेता का गुणगान अवश्य मिलता है। मैथिलीशरण गुप्त से लेकर निराला, महामना मालवीय, नेहरू जी तक गुणगान इनमें है।

डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन ने जब कविता के क्षेत्र में प्रवेश किया तब छायावादी–रहस्यवादी साहित्य प्रबल रूप में रहा, इसलिए प्रारम्भ में व्यक्तिगत प्रेम के आधार पर वे कविता लिखने लगे लेकिन जब जीवन की कठोर वास्तविकता का सामना करना पड़ा तब सुमन जी कैसे चुप रह सकते थे ? फलतः उनकी दृष्टि अपने चारों ओर के समाज पर पड़ी और 'कला, कला के लिए' सिद्धान्त का खोखलापन तथा 'कला, जीवन के लिए' की सार्थकता सिद्ध करने लगे। सुमनजी के काव्य में उनके स्वभाव के अनुरूप ही राष्ट्रीय चेतना प्रकट हुई वे अन्याय के प्रति विद्रोह प्रकट करते हुये दिखाई देते हैं क्योंकि वे जन्म से ही स्वतंत्रता–प्रेमी और देश के प्रति अनुराग की भावना से भरे थे। वे सदा गतिशीलता पर विश्वास करते थे इसलिये रास्ते के रोड़ों को देखकर कभी विचलित नहीं होते थे। उन्होंने तुमुल स्वर में कहा–

उत्थान और पतन सभी में
एकरस बहता रहूँ
टकरायें हिमगिरि सामने
फिर भी गति मंद न हो
यह गति न मेरी बंद हो।'

सुमन जी ने अपनी कविताओं में राष्ट्र, राष्ट्रीय जन और संस्कृति का गुणगान किया है। वे भारत–भूमि की महिमा का गान करते–करते थकते नहीं थे। देश के प्रतीक के रूप में उन्होंने विंध्य और हिमालय को अपनाया है। जो प्रेम–गीत लिखते हैं विहंगम दृष्टि से देखने पर उनके अंदर अपने राष्ट्र और देश की प्रकृति के प्रति जो प्रेम है वह भी स्पष्ट परिलक्षित होता है–

'अंतर में ढ़लता लावा–सा दुर्धर

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

कुछ लगा सालने अंदर ही अंदर
अब जन्म–जन्म की नींद खो गयी रे
मुझको प्रभात की किरण छू गई रे।'

यहाँ 'प्रभात की किरण' का वर्णन है, लेकिन यहाँ नवजागरण एवं नवोत्थान की सूचना भी मिलती है। सुमनजी के समय राष्ट्रीय संग्राम जोर–शोर से चल रहा था। निराला के समान वे भी जानते थे कि परतंत्रता भयंकर अभिशाप होती है और स्वतंत्र भारत ही आगे बढ़ सकेगा। सुमनजी चंद्रशेखर आजाद, भगतसिंह आदि क्रांतिकारी युवकों से प्रभावित थे। गाँधीजी की अहिंसा के संपर्क में आने के पहले ही कवि विप्लवकारियों के संदर्भ में अपने विद्यार्थीकाल में आ चुके थे इसलिये उनकी स्वाभाविक विद्रोही प्रकृति प्रचंड रूप में प्रकट होने लगी–

'आओ वीरोचित कर्म करो
मानव हो, कुछ तो शर्म करो
यों कब तक सहते जाओगे,
इस परवशता के जीवन से
विद्रोह करो, विद्रोह करो।'

जो देश राजनीतिक दृष्टि से स्वतंत्र न हो, उस देश में राष्ट्रीयता पनप नहीं सकती इसलिये सुमनजी 'जीवन के गान' और 'प्रलय–सृजन' की कविताओं के द्वारा देश को स्वतंत्र करने की प्रेरणा देते हैं–

'कुछ मस्तक कम पड़ते होंगे,
जब महाकाल की माला में
माँ माँग रही होगी आहुति
जब स्वतंत्रता की ज्वाला में
पल भर भी असमंजस में
पथ भूल न जाना पथिक कहीं ।'

देश की स्वतंत्रता के लिये मर मिटने का सौभाग्य बार–बार प्राप्त नहीं होता इसलिये सुमनजी बलिदानी बन जाने की प्रेरणा देते हैं –

'कितनी शताब्दियों बाद
सुनाई पड़ा आज दुंदुभि का स्वर
हत् भाग्य गुलामों ने पाया
फिर हँस–हँस मिटने का अवसर
बलिदानी! आज परीक्षा दो
बलि की शुभ बेला आ पहुँची।'

भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात् दूसरे देशों को स्वतंत्र कराने, उनके स्वतंत्रता सग्राम को समर्थन देने की प्रेरणा भी परवर्ती कवियों में मिलती है। 'फौलाद ढले' बांग्लादेश के जन्म के समय पर लिखी गई कविता है जो उपरोक्त कथन का समर्थन करती है। सुमनजी समाज की पतित अवस्था से क्षुब्ध होते हैं। आपसी भेदों को दूर करके लोगों को संगठित होने की प्रेरणा देते हैं। अंग्रेजी शासन जो शोषण कर रहा था उसके विरूद्ध लोगों को सचेत करते हैं। स्वाधीन भारत को समझाते हैं कि स्वतंत्रता बहुत सरलता से नहीं आई है, उसकी रक्षा करना हमारा धर्म है। 'जीवन के गान' की 'विद्रोह करो, विद्रोह करो, आज कवि कैसी निराशा, हाय, नहीं यह देखा जाता आदि कविताएँ संशोधित जनता का चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करती है तो 'प्रलय सृजन' की बंगाल के अकाल की कविता में चित्रित कृत्रिम अकालग्रस्त जनता का बेहाल हमें विचलित कर देता है। 'फूट आपस में हुई गौरी आ धमका' (मिट्टी की बारात) कहकर कवि आपसी फूट से हुए अधःपतन को स्मरण दिलाते हैं। वे हम भारतीयों से कहते हैं –

'इसलिए बिखरी शक्तियों को फिर सहेज करो
कौम के कारवाँ की घंटियों को तेज करो।''

सुमन जी ने केवल महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, लालबहादुर शास्त्री, भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद, महामना

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

मालवीय आदि भारत के महान् नेताओं और शहीदों के प्रति ही अपनी श्रद्धा भरी कवितांजलियाँ समर्पित नहीं की हैं, अपितु रवीन्द्रनाथ टेगौर, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', रामधारीसिंह 'दिनकर' आदि महान् कवियों के प्रति भी अपनी भावभीनी श्रद्धांजली समर्पित की है। यदि हम संस्कृति के गुणगान की बात करे तो जो कवि महाकाल की नगरी का निवासी है और जो कालिदास की शेष कथा कहने के लिए उपस्थित है, तो क्या वह प्राचीन महिमा को भूल सकता है–

'विंध्या की बेदी पर बैठा मैं एक अग्नि चित होता हूँ
आहुत अगस्त्य के चरणों से फूटा छोटा–सा सोता हूँ?

सुमनजी जब कभी राष्ट्रीय स्वतंत्रता के संदर्भ में लिखते थे तब उनकी ओजस्विता और तेजस्विता अवश्य दर्शनीय होती है। उस समय उनका आक्रोश ह्रदय दहला देता है –

'लोग निपूति कहते पर
यह दिन न देखना पड़ता
मैं न बंधनों में सड़ती
छाती में धूल न गड़ता।'

विभाजन के बाद गाँधीजी की मृत्यु, गणराज्य की स्थापना, सन् 1962 का चीनी आक्रमण, सन् 1965 का पाकिस्तानी आक्रमण, नेहरू शास्त्री की मृत्यु आदि प्रमुख घटनाओं के साथ दिसम्बर 1971 में भारत पाकिस्तान युद्ध और बंगलादेश का उदय हुआ। इन परिस्थितियों के कविश्री बच्चन एवं सुमनजी साक्षी हैं और उनकी संवेदना अपने युग की चेतना से निरन्तर आंदोलित होती रही है और उनके साहित्य में उन घटनाओं का प्रतिबिम्बन देखा जा सकता है। गाँधीजी की हत्या सुमनजी के लिए ह्रदयविदारक घटना थी । सुमनजी की पर आँखें भरी–भरी, गाँधीजी को कवि की सच्ची श्रद्धांजलि है। गाँधी की 97 वीं वर्षगाँठ पर नोआखली वाली यात्रा के समय सुमनजी 'युग सारथि गाँधी के प्रति' कविता की रचना हुई। इस कविता में कवि ने गाँधीजी को अमरकृति, दृढ़वती, वीतरागी, नीलकण्ठ, करुणा–मय, अक्षय–वट, अजानबाहु, सारथी, नंगा फकीर, गौतम, दधीचि आदि विशेषणों से संबोधित किया है। बापू के अंतिम उपवास पर कविता में गाँधीजी के गुणों की चर्चा की गई है। 'महात्माजी के महानिर्वाण' पर कविता में गाँधीजी की मृत्यु के पश्चात् परम्परागत् ढंग से उनका मूल्यांकन हुआ है।

महाप्रयाण कविता में कवि मानवतावादी दृष्टिकोण रखते हुए गाँधीजी के सिद्धान्तों को जीवन में अपनाने की शपथ लेता है। 12 फरवरी, 1948 को गाँधीजी के अस्थि विसर्जन के समय गाँधी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कवि ने 'तुम कहाँ शांति के सार्थवाह' कविता की रचना की अंत में 'वह चला गया' कहते हुए कवि की आँखें भर आती है। सुमनजी ने गाँधीजी के जीवन दर्शन को अपने जीवन में ढालने का प्रयास किया। गाँधीजी के हत्यारे के प्रति कवि में जितना आक्रोश है, उतना अन्य किसी के प्रति नहीं कवि प्रतिशोध की भावना से उबल उठता है । परन्तु गाँधी के सत्य, अहिंसा, प्रेममय जीवन की शपथ लेते हुए क्षमाशील हो जाता है–

'बापू हम लेते शपथ, तुम्हारे सत्य प्रेम जीवन कीअन्तिम
आहुति के क्षण में, बिखरे उष्ण रक्तमय चन्दन की,
हत्यारे के प्रति क्षमाशील, उन्मुक्त ह्रदय अभिनंदन की।'

गाँधीजी भी सत्य व अहिंसा की मौलिक विचारणा पर बल देते हैं। गाँधीजी के सत्य, अहिंसा आदि आदर्श सिद्धान्तों के प्रति सुमनजी सजग हैं, वे उन्हें अपने जीवन में, समाज में स्थापित करके भी प्रतिज्ञा करते हैं –

तो बापू, हम निर्द्वद्व, तुम्हारे आदर्शों की छाया में,
यही दीपक सत्य अहिंसा का, पलभर न कभी बुझने देंगे।
विश्वास प्रेम की वेदी पर, झण्डा न कभी झुकने देंगे,
जब तलक रक्त की एक बूंद भी, शेष हमारी काया में।'

सुमन जी कहते हैं कि–गाँधीजी ने अपनी कर्मसाधना से तीन डगो में नभ, जल् नापे और पृथ्वी पर स्वर्ग को उतारने में समर्थ हुए।

अधिकार कर्म का लिये, प्राप्तिफल आशा से सर्वदा दूर।
डगमग–डगमग अहिकोल कमठ
नप गए तुम्हारे तीन डगों में नभ, जल, थल

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

नयनों में आत्मप्रकाश प्रबल।
"तुम थे जो स्वर्ग उतार सके पृथ्वी पर।"

इस प्रकार कवि श्री सुमनजी की गाँधी जी के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा हिन्दी की साहित्य बेजोड़ उपलब्धि है। पर आँखें भरी–भरी में उनकी गाँधीजी के प्रति अपार, श्रद्धा उनके प्रति कवि की सच्ची श्रद्धांजलि हैं। दूसरी ओर निराला कई विषयों पर गाँधी से असहमत थे। इसीलिए वे उन पर अलग से रचना करने से विमुख ही रहे। सुमनजी के अपने युग में भारत का स्वतंत्रता संग्राम बहुत जोरों से चल रहा था। माता का जीवन अभिशाप है स्वतंत्रता में ही भारत का उत्थान संभव है। गाँधी के आदिका के संपर्क में आने के पहले ही सुमनजी क्रानितकारियों के संपर्क में आए थे, यही चंद्रशेखर आजाद, भगतसिंह जैसे क्रांतिकारियों से प्रभावित हो गए थे । इसलिए तानाही शक्ति प्रचण्ड क्रान्ति के रूप में प्रकट होने लगी क्रान्ति की आग चिनगारी के रूप में प्रकट होकर ज्वाला में परिवर्तित हो गयी है।

तुमने जो थी आग लगाई, आज जगत की ज्वाला बनकर
बिखर पड़ी वह चिन्गारी।

वे देशवासियों को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की और प्राण विसर्जन करने की प्रेरणा देते हैं–

अपने अतीत की कालिख तो, लोहू की लाली से धो दो,
युग–युग के बन्दी मानव को, करना है तुमको मुक्त आज,
आओ युग जन युग का ऋण दो, बलि की शुभ बेला आ पहुँची।

सुमन जी जाग्रत होने के लिये देशवासियों से आह्वान करते हैं। प्रान्त, जाति और भाषा के कारण जो भेदभाव पैदा हो गये हैं। उन्हें वे मिटाना चाहते हैं। देश की संस्कृति से अपार प्रेम होने के कारण वे इतिहास निर्माताओं के प्रति आभार प्रकट करते हुये दिखाई देते हैं। एक आदर्श रचनाकार राष्ट्र को हर स्थिति में बेहतर देखने का आकांक्षी होता है) नेपाल से लौटने के बाद देश की स्थिति देखकर सुमनजी भी चिन्तित हो उठे स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी देश में व्यापक भ्रष्टाचार फैला हुआ है बढ़ती हुई अराजक के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हुये वे कहते हैं–

ऐसी गुण्डागर्दी में मैं क्या मौन रहूँ, क्या क्लीवों का बाना पहनें, मटकूँ गाऊँ
या आग समेटू बिखरे बुझते चूल्हों की, दावाग्नि जमाने की दावा सी दहकाऊँ

इस प्रकार सुमनजी अपने देश की संस्कृति के प्रति समर्पित है। उनकी अपनी संस्कृति के प्रति अदम्य आस्था है। उन्होंने अपने कावरू में राष्ट्रीय चेतना के स्वर को मुखर किया है और भारतीय संस्कृति के लोक कल्याणकारी स्वरूप की व्याख्या की हैं जो उत्तरछायावादी काल में अपना महत्वूर्ण योगदान देती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. क्रांग्रेस का इतिहास – डॉ. पट्टामिसीतारमैया
2. छायावादोत्तर हिन्दी प्रगति – डॉ. विनोद गोदरे
3. सुमनः मनुष्य और सृष्टा – डॉ. प्रभाकर क्षोत्रिय
4. जीवन के गान – डॉ. सुमन
5. विंध्य हिमलाय – डॉ. सुमन
6. प्रलय सृजन – डॉ. सुमन
7. मिट्टी की बारात – डॉ. सुमन
8. विष्वास बढ़ता ही गया – डॉ. सुमन
9. पर ऑख नही भरी – डॉ. सुमन

*****

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14